नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़- गोरखपुर
मो. : 7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com
स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 04.02.2018

प्रकाशनार्थ

साहित्य लोगों के चिन्तवृत्ति का दर्पण है। यह सदैव परिवर्तनशील है इसलिए यह नए शब्दों को ग्रहण करती है तथा पुरानें शब्दों को छोड़ती है तभी वह जीवन्त है। हिन्दी प्रतिरोध की भाषा है यह अनेक आक्रान्ताओं से लड़ने में समर्थ रही है। आक्रान्ताओं ने इसे मिटाने और तोड़ने का प्रयास किया, पहले उन्होंने भाषा बाँटी फिर मन बटा फिर जमीन बटी।

उपरोक्त बातें महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के हिन्दी विभाग द्वारा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सहयोग से 'स्वतंत्र भारत में हिन्दी की विकास यात्रा' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन तृतीय सत्र में बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ0 अनुपम आनन्द ने कही इसी सत्र के मुख्य वक्ता डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि काली मिर्च का व्यापार करने आयी एक कम्पनी ने हम पर राज करना शुरू कर दिया 1800 ई0 में फोर्ट वीलियम कालेज की स्थापना कर अंग्रजों ने हिन्दी सीखना शुरू किया उस समय हिन्दी की अनिवार्यता थी और आज 200 वर्षों बाद स्थिति उलट गयी है आज अंग्रेजी की अनिवार्यता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो0 रमेश चन्द्र त्रिपाठी जी ने कहा कि हिन्दी के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों को पुरस्कृत करने की जरुरत है। गाँधी जी भी हिन्दी के पक्ष में थे उनका कथन है 'अगर मेरा बस चलता आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा बन्द करा देता और जो शिक्षक ऐसा करने में आनाकानी करते उनको बरखास्त कर देता पाठ्यक्रम बनाने का भी इंतजार नही करता' तृतीय तकनीकि सत्र के पश्चात् आयोजित विशेष व्याख्यान सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो0 सदानन्द प्रसाद गुप्त जी ने कहा कि यद्यपी हिन्दी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के बहुत सारे अवार खुले है, विज्ञान, चिकित्सा, व्यापार, मनोरंजन, प्रकाशन के क्षेत्र में हिन्दी का प्रवेश हुआ है तथापि हिन्दी जबतक

क्रमशः 2

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़- गोरखपुर
मो. : 7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com
स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 04.02.2018

राजभाषा व राष्ट्रभाषा नही बन जाती देश अपने स्वाभिमान व अस्मिता सुरक्षित नही रख सकता। भाषा से कट जाना अपने संस्कृति, इतिहास, परम्परा से कट जाने जैसा है। वही विशिष्ट व्याख्यान में बोलते हुए प्रो0 पवन अग्रवाल ने वर्तमान कम्प्यूटर, प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी के विकास की गहन चर्चा की।

इसके पश्चात् चतुर्थ तकनीकि सत्र में कौटिल्य कक्ष, वराहमिहिर कक्ष, शिवाजी कक्ष, समर्थगुरु रामदास कक्ष में एक साथ प्रशिक्षण सत्र चले जिसकी अध्यक्षता प्रो0 सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी, डॉ0 सुशील कुमार पाण्डेय, डॉ0 जगदम्बा प्रसाद दूबे तथा विषय विशेषज्ञ के तौर पर डॉ0 सर्वेश पाण्डेय, डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह, प्रो0 पवन अग्रवाल तथा डॉ0 मिनाक्षी सिंह नें विद्यार्थियों द्वारा उठाए गये विभिन्न प्रश्नों जैसे प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी की अनिवार्यता, वर्तनी सुधार, देशी विदेशी भाषाओं का सम्मान करते हुए हिन्दी भाषा को बढ़ावा कैसे दिया जाय, शोधार्थियों को हिन्दी में शोध करने के लिए कैसे प्रोतसाहित किया जाये, केन्द्र में अंग्रेजी की बाध्यता क्यों आदि मत्विपूर्ण प्रश्न पूछे गये जिसका समाधान विषय–विशेषज्ञों ने किया।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी